डॉ.पांडुरंग पाटील
अध्यक्ष,
हिंदी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,कोल्हापुर

## संस्तुति पत्र

मैं संस्तुति करता हूँ कि इस लघु शोध-प्रबंध को परीक्षा हेतु अग्रेषित किया जाय।

स्थान : कोल्हापुर
तिथि : 19 NOV 1999

(डॉ.पांडुरंग पाटील)
अध्यक्ष
हिंदी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर-४१६००४

**डॉ.वसंत केशव मोरे**
❑भूतपूर्व अध्यक्ष, हिंदी विभाग, तथा
❑प्रमुख अन्वेषक, बृहत् शोध परियोजना, (यु.जी.सी.)
हिंदी विभाग, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर.
❑महासचिव, दक्षिण भारत हिंदी परिषद.

## प्रमाणपत्र

मैं प्रमाणित करता हूँ कि श्री.कृष्णात आनंदराव पाटील ने शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की एम्.फिल. (हिंदी) उपाधि के लिए प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध ''हिमांशु जोशी के उपन्यासों में आँचलिकता'' मेरे निर्देशन में सफलतापूर्वक, बड़े परिश्रम के साथ पूरा किया है। जो तथ्य इस लघु शोध-प्रबंध में प्रस्तुत किए गए हैं, मेरी जानकारी के अनुसार सही हैं। श्री.कृष्णात आनंदराव पाटील के प्रस्तुत शोधकार्य से मैं पूरी तरह से संतुष्ट हूँ।

स्थान : कोल्हापुर
तिथि : 19 NOV 1999

(डॉ.वसंत केशव मोरे)
शोध-निर्देशक

कृष्णात आनंदराव पाटील
मु.पो.शिरोली, तहसील - करवीर,
जिला - कोल्हापुर, 416 001.

## प्रख्यापन

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध मेरी मौलिक रचना है, जो एम्.फिल.(हिंदी) उपाधि के लिए प्रस्तुत की जा रही है। यह रचना इससे पहले शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर या अन्य किसी विश्वविद्यालय की उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गयी है।

स्थान : कोल्हापुर

तिथि : 19 NOV 1999

(कृष्णात आनंदराव पाटील)

# प्राक्कथन

## प्रस्तावना -

भारत कृषि प्रधान देश है। आज भी 80% प्रतिशत लोग देहातों में रहते हैं। मैं भी देहात का रहनेवाला हूँ। देहातों की समस्याओं का अनुभव कर चुका हूँ। देहातों का महत्त्व गांधीजी ने जाना था। इसलिए उन्होंने भारतवासियों को `देहात की ओर चलो` का संदेश दिया था। इसी कारण देहात के प्रति मेरे मन में रूचि है। खेती-बाड़ी सँभलने के साथ-साथ मैंने एम्.ए.पास किया। एम्.ए. के बाद एम्.फिल.करने की अदम्य इच्छा होने के कारण उसी ओर अध्ययन जारी रखा। इसके साथ-साथ शोध प्रविधि से परिचय पाना और विशाल हिंदी साहित्य के कम-से-कम एक अंश का परिचय पाने की जिज्ञासा के कारण एम्.फिल. करने की बात मैंने ठान ली। दसवीं कक्षा से मेरी उपन्यास विधा के प्रति रूचि रही है। एम्.ए.में मैंने प्रेमचंद जी का `गोदान` उपन्यास पढ़ा। इस उपन्यास से मैं पूर्णत: प्रभावित हूँ। ठीक इसी प्रकार के आधुनिक आँचलिक उपन्यास की मुझे खोज थी। एम्.ए. के अध्ययनोपरांत हिमांशु जोशी जी का `कगार की आग` उपन्यास पढ़ने में आया। इस उपन्यास से मैं इतना प्रभावित हुआ कि एक सांस में उसे पूरा पढ़ गया। इसमें वर्णित स्थिति लगभग हमारे गाँव की स्थिति जैसी है। इसी कारण ग्रामीण जीवन में व्याप्त परिस्थितियाँ तथा समस्याओं को समाज के सामने लाने के लिए उपन्यास अच्छा लगा। हिमांशु जोशी जी के उपन्यास साहित्य का आकर्षण बढ़ा। धीरे-धीरे जोशी जी का पूरा उपन्यास साहित्य पढ़ा तो ठीक इसी प्रकार का आँचलिक ग्रामजीवन पर आधारित दूसरा `अरण्य` नामक उपन्यास प्राप्त हुआ।

जोशी जी आधुनिक रचनाकार है। इसी कारण नए आँचलिक उपन्यास आधुनिक युग की देन हैं। इन दो उपन्यासों में जोशी जी ने अपने जीवनानुभव प्रस्तुत किए हैं, साथ-साथ प्रेमचंद जी की तरह मध्यवर्ग की संवेदना को वास्तव रूप दिया है। उन्होंने इनमें सार्वभौमिक मनुष्यत्त्व की पीड़ा, निम्न वर्ग - मध्य वर्ग का यथार्थ चित्रण किया है। शोषक-शोषितों के संघर्षों का चित्र भी हमारे सामने प्रस्तुत किया है। जोशी जी का उपन्यास साहित्य पढ़ने के लिए मुझे डॉ.अनिल साळुंखे द्वारा प्रेरणा मिली।

## संपन्न कार्य -

आज तक हिमांशु जोशी जी के साहित्य पर निम्नांकित शोधकार्य हुआ है -

(1) पीएच्.डी. उपाधि के लिए -

(1) `हिमांशु जोशी के कथा साहित्य में चित्रित समाज जीवन`

अनिल साळुंखे (शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर, जून - 1997)

(2) एम्.फिल. -

(1) `हिमांशु जोशी की कहानियों का अनुशीलन`

सुरेखा परशराम शेंडगे (शिवाजी विश्वविद्यालय कोल्हापुर - जून 1993)

(2) `हिमांशु जोशी का कहानी साहित्य`

सुनिता जाधव (दिल्ली विश्वविद्यालय)

उपर्युक्त शोधकार्य के साथ-साथ शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर में प्रा.श्री.बी.डी.कदम जी का `हिमांशु जोशी के साहित्य का मूल्यांकन` इस विषय पर पीएच्.डी. उपाधि के लिए शोधकार्य जारी है। इसके साथ-साथ मणिपुर, राँची, बम्बई, आगरा, मेरठ, पंजाबी, गुजरात आदि अनेक विश्वविद्यालयों से शोध हुए हैं। एम्.फिल. के साथ-साथ लगभग बीस शोधार्थियों ने पीएच्.डी. की है। लेकिन आज तक उनके उपन्यास साहित्य में प्रस्तुत आँचलिकता को लेकर किसी ने शोधकार्य नहीं किया है। इसी कारण उनके आँचलिक उपन्यासों का मूल्यांकन होना आवश्यक था। अत: इन दो आँचलिक उपन्यासों पर शोधकार्य करने की बात मैंने ठान ली। जोशी जी ने इन दो उपन्यासों में अंचल जीवन को ही केंद्र बनाया है। इसी कारण आँचलिक जीवन को महत्त्व मिला है। इसमें मार्मिक ढंग से आँचलिकता को चित्रित किया है तथा विविध पहलुओं को भी बड़ी कुशलता से समेटा है। स्वातंत्र्यपूर्व तथा उसके बाद के पहाड़ी जीवन के चित्रण के साथ-साथ महानगरीय और पहाड़ी जीवन को जोड़ने का प्रयास किया है। लेखक की मानसिकता पहाड़ी जीवन से जुड़ी है।

जोशी जी के कुल मिलाकर सात उपन्यास हैं। उनमें से केवल दो ही उपन्यास आँचलिक हैं - (1) अरण्य, और (2) कगार की आग। अत: मैंने आँचलिकता को प्रमुख आधार बनाकर तथा जोशी जी के उपन्यासों में प्रस्तुत आँचलिकता पर शोधकार्य की क्षतिपूर्ति के लिए मेरे शोध निर्देशक श्रद्धेय डॉ.वसंत मोरे जी से सलाह-मशवरा कर `हिमांशु जोशी के उपन्यासों में आँचलिकता` इस शीर्षक पर शोधकार्य की शुरूआत की।

अनुसंधान के प्रारंभ में मेरे मन में निम्नांकित सवाल उठे थे -

(1) हिमांशु जोशी के कृतित्व पर उनके व्यक्तित्व का प्रभाव कितना है ?

(2) क्या, हिमांशु जोशी जी के आँचलिक उपन्यास, आँचलिक उपन्यास के तत्त्वों पर खरे उतरते हैं ?

(3) हिमांशु जोशी जी का आँचलिक उपन्यास लिखने में क्या उद्देश्य रहा है ?

उपर्युक्त सवालों के उत्तर जो मुझे प्राप्त हुए हैं उन्हें उपसंहार में दर्ज किये हैं।

अनुसंधान की सुविधा हेतु प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध का पाँच अध्यायों में विभाजन किया है -

**प्रथम अध्याय - हिमांशु जोशी : व्यक्तित्व एवं कृतित्व ।**

इस अध्याय में हिमांशु जोशी जी के व्यक्तित्व और कृतित्व का परिचय दिया है। व्यक्तित्व के अंतर्गत उनके बचपन से लेकर आज तक की पारिवारिक स्थिति को सम्मिलित किया है तथा आज तक विविध विधाओं में लिखी विभिन्न रचनाओं का परिचय कृतित्व के अंतर्गत रखा है। इसमें जोशी जी के दोनों आँचलिक उपन्यासों का सामान्य परिचय भी दिया है। अध्याय के अंत में निष्कर्ष प्रस्तुत किया है।

**द्वितीय अध्याय - आँचलिक उपन्यास : परिभाषा तथा स्वरूप ।**

इस अध्याय में सैंद्धातिक रूप में अंचल परिभाषा, स्वरूप, प्रकार आदि पर विवेचन किया है। साथ-ही-साथ आँचलिक उपन्यास उद्भव और विकास, परिभाषा, स्वरूप तथा आँचलिकता के महत्त्व को भी स्पष्ट किया है। शहरी और ग्रामांचल के अंतर पर विवेचन दिया है। अंत में आँचलिक उपन्यासों में चित्रित विभिन्न परिस्थितियों का संक्षेप में विवेचन दिया है। निष्कर्ष रूप में जो भी तथ्य सामने आए उन्हें अंत में प्रस्तुत किया है।

**तृतीय अध्याय - हिमांशु जोशी के `अरण्य` उपन्यास में आँचलिकता ।**

इस अध्याय में `अरण्य` उपन्यास का आँचलिक उपन्यास के तत्वों पर मूल्यांकन किया है। जिसमें कथानक का आधार, आँचलिक पात्र, भाषा-संवाद-शैली, कथोपकथन, आँचलिक वातावरण या पृष्ठभूमि, लोकसंस्कृति, युगीन चेतना तथा प्राकृतिक स्थिति के फलस्वरूप उत्पन्न समस्याओं का सोदाहरण विवेचन दिया है। अंत में निष्कर्ष दर्ज किया है।

**चतुर्थ अध्याय - हिमांशु जोशी के `कगार की आग` उपन्यास में आँचलिकता ।**

इस अध्याय में उपर्युक्त तृतीय अध्याय की तरह `कगार की आग` उपन्यास का आँचलिक उपन्यास के तत्वों पर सोदाहरण विवेचन दिया है। अध्याय के अंत में निष्कर्ष प्रस्तुत किया है।

**पंचम अध्याय - हिमांशु जोशी के आँचलिक उपन्यासों की विशेषताएँ ।**

इस अध्याय में जोशी जी के दोनों आँचलिक उपन्यासों की समानताएँ तथा विशेषताओं को दर्ज किया है। इसमें भाषा, वर्णन शैली, संस्कृति और सौंदर्यात्मक दृष्टि आदि समानताओं पर विवेचन दिया है। परंपराप्रिय समाज-चित्रण,विवाह-प्रथा, जीवन-व्यापार, कुतूहल बढ़ानेवाली घटनाएँ, पात्र, विभिन्न समस्या, राजनीतिक स्थिति आदि विभिन्न बातों पर दोनों उपन्यासों में जो समानताएँ तथा विशेषताएँ मिलती हैं उनका स्पष्ट रूप से विवेचन इस अध्याय में दिया है। अध्याय के अंत में निष्कर्ष प्रस्तुत किया है।

**उपसंहार -**

शोधकार्य के उपरांत प्राप्त निष्कर्षों को सार रूप में उपसंहार में लिखा है तथा प्रस्तावना में उठाएँ सवालों के उत्तर अनुसंधान की उपलब्धियों के रूप में दर्ज किए हैं।

ऋणनिर्देश -

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध श्रद्धेय गुरुवर्य डॉ.वसंत मोरे जी के निर्देशन में पूरा हुआ है। अपने बृहत् शोध परियोजना (यु.जी.सी.) के कार्य में व्यस्त रहकर भी उन्होंने मुझे समय-समय पर मार्गदर्शन तथा अपने गहरे अनुभव से लाभान्वित किया है। अत: मैं उनके विशाल ज्ञान से कृतार्थ हूँ। डॉ.मोरे जी के आत्मीय एवं प्रेरक निरीक्षण और निर्देशन का प्रतिफलन ही यह शोधकार्य है। उनके ऋण से मुक्त न होकर उनके ऋण में ही रहना मैं पसंद करता हूँ।

शिवाजी विश्वविद्यालय हिंदी के विभागप्रमुख आदरणीय डॉ.पांडुरंग पाटील जी ने मुझे एम्.फिल. के लिए प्रेरित किया और समय-समय पर मार्गदर्शन करते रहें। अत: उनके प्रति में सविनय आदर प्रकट करता हूँ।

इसके साथ-साथ आदरणीय गुरुवर्य डॉ.अर्जुन चव्हाण, प्रा.अरविंद पोतदार, डॉ.बाबासाहेब पोवार तथा यशवंतराव चव्हाण महाविद्यालय, कोल्हापुर के प्रा.संभाजी पाटील इनका पल-पल मिलनेवाला मार्गदर्शन आज भी याद आता है। इनके प्रति मैं अत्यंत ऋणी हूँ।

एम्.फिल. हिंदी में प्रवेश लेने के पश्चात् मुझे हर समय अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। इन कठिनाइयों से लड़ने के लिए आज तक प्रा.भगवान कदम, प्रा.प्रकाश चिकुर्डेकर, डॉ.अनिल साळुंखे तथा अशोक बाचूळकर, गिरीश काशीद, डॉ. भारत कुचेकर और अमोल कासार आदि ने प्रोत्साहित कर मेरा उत्साह बढ़ाया इसलिए इन सभी का मैं आभारी हूँ।

मेरे परम-पूज्य माता-पिता तथा भाईयों ने मुझे खेती-बाड़ी के कामकाज से छुट्टी देकर मेरे इस अविरत श्रम के लिए आर्थिक, शारीरिक कष्ट उठाएँ और मुझे कोई तकलीफ महसूस नहीं होने दी। अत: मेरे परिवार के लोग बराबर के हिस्सेदार हैं। विशेष रूप में मेरे छोटे भाई कु.युवराज ने एम्.फिल. होने तक खेती-बाड़ी सँभालने का जिम्मा उठा लिया। अत: उनके प्रति आभार प्रकट कर उनके प्यार के प्रति अविश्वास नहीं दिखाना चाहता हूँ।

मेरे सहपाठी और परममित्र मनोहर भंडारे, कृष्णात पाटील, क्षितीज धुमाळ, हनुमान शेवाळे, कु.मनिषा जाधव, कु.अनघा तोड़करी, कु.संगिता नाईक, कु.शकुंतला गायकवाड और कु.मिलन मस्करेंज आदि ने भी मुझे सहयोग दिया। इनका भी मैं आभारी हूँ।

मेरी स्नेही कु.सविता तथा कु.वैजयंती का सहयोग बड़ा रहा है। उनके सहयोग से ही यह कार्य पूरा कर सका। अत: इनका भी मैं शुक्रगुजार हूँ।

हिमांशु जोशी जी ने शोधकार्य के प्रारंभ में ही उपन्यास भेजकर बड़ा ही सहयोग दिया और पत्रों के माध्यम से पूछताछ कर प्रेरित करते रहें। अत: उनके प्रति मैं कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ।

शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर के बॅ.बाळासाहेब खर्डेकर ग्रंथालय के ग्रंथपाल तथा सभी कर्मचारियों का मैं हमेशा ऋणी हूँ।

अत्यंत अल्प समय में शीघ्रता से प्रबंध टंकलिखित करने का कार्य श्री.मिलिंद भोसले जी ने किया। उनका मैं आभारी हूँ।

मेरे स्नेही श्री.अनिल साळोखे, श्री.रमेश कांबळे (मामा), श्री.वसंत दिंडे (मामा) आदि का भी मैं सहृदय आभारी हूँ।

अंत में जिन विद्वान, गुरुजनों ने सुझाव एवं आशीर्वाद प्रदान कर प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप में सहयोग दिया उन सभी शुभचिंतकों का मैं आभारी हूँ।

स्थान : कोल्हापुर

तिथि : 9

**कृष्णात आनंदराव पाटील**

9